ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

सूर्यबाला के उपन्यास में वर्णित समाज

सारांश

हिन्दी उपन्यास का आरम्भ अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों के द्वारा माना जाता है। हिन्दी में इस विधा का श्री गणेश अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ है। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद्र ने उपन्यास की परिभाषा करते हुआ लिखा है कि, श्मैं उपन्यास को मानव.चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।'[1]

मुख्य शब्द : मुख्य शब्द लिखे

अमित कौर
शोध छात्रा,
हिंदी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

प्रस्तावना

उपन्यास समाज का प्रतिनिधि है। समाज में समस्त घटित घटनाओं से लेकर मानव के ह्रदय में होने वाली छोटी से छोटी हलचल, द्वन्द्व एवं संघर्षो की कहानी इसी के माध्यम से व्यक्त होती हैं। मनुष्य के बाहरी जीवन का जो रूप हम देखते हैं वह जीवन पूर्णतः सत्य नहीं है, क्योंकि मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व से भी अधिक आवश्यक है उसकी आंतरिक भावना। उपन्यास ही एक ऐसी विधा है जो मनुष्य के अन्तर्जगत में प्रवेश कर उसका चित्रण भी उतनी ही ईमानदारी से करता है, जैसा कि बहिजर्गत का।

सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति एवं सामाजिक सबंधों के माध्यम से तथा लेखक ने जिन परिस्थितियों में रचना को सृजित किया वही उस कृति के सामाजिक परिवेश को अभिव्यक्त करता है। समाज के विशिष्ट अर्थ को समझने के लिए 'समाज शब्द को समझना अत्यन्त अनिवार्य है। हम सब लोग इसी समाज में रहते हैं तथा समाज के बिना हमारा जीवन सम्भव नहीं है। अतः इस को स्पष्ट करने के लिए यह भी कहा जा सकता है कि 'जहाँ जीवन है, वहां समाज भी है।'[2]

हिन्दी की प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित कथा लेखिका सूर्यबाला जी यथार्थवादी एवं मानवतावादी जीवन दर्शन की परिचायिका हैं। उनके साहित्य का उद्देश्य मनुष्य के मन की गहराईयों को छूना और आधुनिक समाज की समस्याओं का चित्रण करना रहा है, जिसमें वे शत–प्रतिशत सफल रही हैं। उन्होंने जो कुछ देखा, परखा उसे ही चित्रित किया है। उनके कथा.साहित्य का कथ्य विविधता से ओत–प्रोत है तथा विषम गांव से लेकर महानगर तक फैला हुआ व्यापक क्षेत्र है।

अध्ययन के उद्देश्य

आज हमारा समाज कई प्रकार की समस्याओं, बुराइयों और विसंगतियों से जूझ रहा है तथा समाज में फैली इन बुराइयों का हल ढूंढ़ना आवश्यक हो गया है। हमारे देश में ऐसी अनेक समस्याऐं घट रही हैं जिन्हें देखकर, जानकर भी हम उन्हें अनदेखा कर देते हैं। सूर्यबाला के कथा साहित्य में ऐसी कई समस्याएं हैं जिनसे छुटकारा पाने के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं।

जब–जब पुरुष ने नारी को अपने व्यक्तिगत सत्ता समझकर उसे भोगना और शोषण करना चाहा है तब–तब नारी के भीतर अपनी अस्मिता की रक्षा और पहचान के कई अनुत्तरित प्रश्न उठ खड़े हुये हैं। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन, कामकाजी नारी की समस्या, तलाक, दहेज, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से घिर रहा है। इन समस्याओं का कारण और भोक्ता मनुष्य स्वयं ही है तथा दुर्भाग्यवश यह समस्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। अतः इस अध्ययन का उद्देश्य इन समस्याओं का गहनतापूर्वक विश्लेषण करते हुये विवेकपूर्ण विचारों द्वारा समाज को इन बुराइयों से मुक्त करने के लिये निदान ढूढ़ना है। अतः इस शोधपत्र द्वारा लेखिका सूर्यबाला के कथा साहित्य के माध्यम से समस्याओं का कारण एवं समाधान तलाश करने का प्रयत्न किया गया है।

आधुनिक नारी की सामाजिक, परिवारिक, आर्थिक स्थिति, पति–पत्नी सम्बन्ध तथा उसकी स्थिति एवं गति को अपने अनुभव के दायरे के अंतर्गत जिन

महिला साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया है उसमें श्रीमती सूर्यबाला जी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

लेखिका सूर्यबाला के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष की कहानी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मानवीय रिश्तों की गहराई को तथा अध्यात्म से लेकर संस्कृति की महत्त्वपूर्ण परतों को खोलने का प्रयास किया है उनके उपन्यासों में वर्णित समाज को चन्द्रकान्ता ने इस प्रकार परिभाषित किया है. 'प्रेम की पराकाष्ठा से लेकर बलात्कार तक के वेहशी जुनून का मार्मिक चित्रण सूर्यबाला के उपन्यासों में मौजूद है। आज समाज में जीवन–संतुलन के छिन्न–भिन्न होते जाने का हाहाकार है तो एक चुपचाप आकार पैना करते आक्रोश की छवि भी है। प्रेम की उपस्थिति और अहसास से लेकर बलात्कार की थरथराहट में डूबना.उतरना लेखिका के लेखन.धैर्य और शब्द.सम्पदा, दोनों ही स्तरों पर एक वयस्क प्रतिष्ठा भी प्रदान करता चलता है।'[3]

'मेरे संधिपत्र से लेकर दीक्षांत तक की लम्बी यात्रा में सूर्यबाला ने मानवीय संबंधों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित करने का प्रयास किया है। वे स्वयं कहती हैं, अवसाद, करुणा और द्वन्द्व मेरे लेखन के मूल स्वर अवश्य रहे हैं, किन्तु इन्हीं के बीच से मैं प्रायरू मानवीय संबंधों और मूल्यों की महती प्रतिष्ठा को यथाशक्ति उजागर करने की चेष्ठा करती रही हूँ। लेखन की शुरुआती दौर से ही और अब तक मेरी कोशिश यही रही है कि इतनी विसंगतियां विद्रूप और मोहभंगो के बीच भी मुझे जीवन–आस्था, सौहार्द और स्थायी मानव–मूल्यों की बात की कहानी है। क्योंकि स्थितियों और परिस्थितियों के हिसाब से हम भले ही थोड़े झूठ, थोड़ी मक्कारी और फरेब की वकालत कर लें – किन्तु जब जीवन की मानवता की और शाश्वत मूल्यों की बात उठती है तो हम सच्चाई, ईमानदारी, निष्ठा, त्याग और आस्था को ही सामने माथा नवाते हैं। झूठ बेईमानी और भ्रष्टाचार के सामने नहीं।'[4]

उपन्यास लेखिका सूर्यबाला की उपन्यास यात्रा के तीन चरम बिन्दु द्वन्द्व, करुणा और अवसाद उनकी रचनाधार्मिता के साथ अभिन्न रूप में साकार होते हैं 'मेरे संधिपत्र' में शिवा का अवसाद, 'सुबह के इंतजार तक' में मानू की करुणा, और 'यामिनी दृ कथा' में यामिनी का द्वन्द्व तथा 'दीक्षांत' में शर्मा सर का संघर्ष, 'अग्निपंखी' में जयशंकर का जीवन से संघर्ष इसी बात के पूरक है आदमी बहुत बुरा होता भी नहीं, परिस्थितियां होती हैं और वे ही आदमी को अच्छा या बुरा बनाती है। तो, मेरे पात्र परिस्थितियों की मार से दबे होते हैं, बुरे नहीं।'[5]

आलोच्य लेखिका के उपन्यासों में समाज का अध्ययन विस्तृत रूप से किया गया है। आज के समाज में सामाजिक जीवन की सामाजिक समस्याओं का विस्तृत चित्रण उनके उपन्यासों में मिलता है। 'परिवार विघटित होने लगे, पारंपरिक स्त्री की जगह आधुनिक स्त्री ने ले ली। एक ही संतान के लिए वह आग्रह करने लगी। वह आर्थिक दृष्टि से निर्भर बनी'[6] आज इस परिवर्तित युग में वह एक साथ जीवनसाथी , नर्स , प्रेमिका, ग्रहस्वामिनी हो नहीं सकती। परन्तु फिर भी आज की कामकाजी नारी घर और ऑफीस दोनों अच्छी तरह से सम्भालनें की कोशिश कर रही है। फिर भी स्त्री–पुरूष दोनों में अनबन होकर परिवार विघटित हो जाता है।

'पति का शराबी होना, ऊपर से आर्थिक स्थिति खराब होना परिवार को विघटित कर देता है।'[7] 'गांव छोड़कर महानगरों में मकान की समस्या होने के कारण व्यक्ति के अन्तर्मन में द्वन्द्व के भाव बढ़ जाते है।'[8] लेखिका सूर्यबाला ने समाज की समस्त समस्याओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है 'आज हमारी पढ़ी दृलिखी नारी संयुक्त परिवार में तथा बड़े–बूढों के नियन्त्रण में रहना पसन्द नहीं करती।'[9]

सूर्यबाला हिन्दी साहित्य जगत् की एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कथाकार है। समकालीन महिला लेखकों में सूर्यबाला को विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। हिन्दी कथा–साहित्य को अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने एक नई दिशा प्रदान की है। उन्होंने समाज में स्थिरता तथा शांति का सकारात्मक दृष्टिकोण सामने रखकर अपने साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने अपने साहित्य में राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन किया है। 'दीक्षांत' उपन्यास में राजनीतिक नेताओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप को चित्रित किया गया है। 'इस कॉलेज में एक से एक मगरमच्छ किस्म के लोग शिरकत करते हैं। जो स्वंय सरगोशियाँ काना–फूसियाँ करते हैं। पालिटिक्स के प्रोफेसर चन्द्रभान सिंह जिन के लिए कोई भी कार्य पहुँच से परे नहीं हैं। उनके पास बदमाशों का एक पूरा दल है, जिसके बल पर कॉलेज में और उसके बाहर उनकी धाक जमी है।'[10] लेखिका सूर्यबाला जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से चित्रण किया है उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' की नायिका मानू का परिवार आर्थिक तंगी के कारण अपनी अस्त दृव्यस्त हालत ढंकने की कोशिश कर रहा है। 'हम निम्न मध्यवर्ग के प्रतिनिधि परिवार के थे, उस मध्य वर्ग के जो कहीं पर तथाकथित निम्न वर्ग से भी निम्नतर होता है। अन्दर से नितान्त दयनीय, तिल–तिलकर चुकता हुआ, ऊपर से सफेदपोश इज्जतदार।'[11] 'अग्निपंखी' नामक उपन्यास में लेखिका ने जयशंकर की आर्थिक स्थिति का चित्रण करते हुए अपनी दृष्टि इस ओर इंगित की है कि एक पढ़ा – लिखा युवक लोगों के ताने भी सुनता है। 'इस पढ़े लिखे से तो बेपढ़े ही भले भैया।'[12]

'मेरे संधिपत्र' की नायिका शिवा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो पढ़ाई–लिखाई में सदैव प्रथम संतान पर आती थी तथा वह अपनी जिन्दगी में कुछ करना चाहती थी किन्तु पारिवारिक परिस्थितियों के कारण वह अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकी। 'मेरे पास बैठने तक की फुरसत कहाँ। होती तो बीमारी में। तब भी काम छोड़कर बैठती। सिराहने बैठे–बैठे किताब पढ़ते–पढ़ते दवा देती। फिर चूल्हा फूकती ।'[13]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज से कटकर अकेला अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। लेखिका ने भी अपने उपन्यासों में समाज सम्बन्धित अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। 'मेरे संधिपत्र' तथा 'यामिनी कथा' में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया है। 'मोतियों की झालर में उलझे एक

सुकुमार से चेहरे को देख मैंने, रिंकी ने बारी–बारी एक दूसरे को देखा और आँखों–आँखों से पूछना चाहा यह कैसी मम्मी !..... छोटी, दुबली पतली सी, दीदियों जैसी।'[14] 'यामिनी–कथा' में यामिनी के प्रथम पति की मृत्यु के पश्चात् उसका विवाह निखिल से तय होता है 'लेकिन तब भी कहाँ मैं छत्तीस साल की प्रौढ़ विधवा, साथ ही बारह साल के एक बच्चे की माँ और कहाँ निखिल–बत्तीस साल के अविवाहित शालीन युवा।'[15] 'यामिनी कथा' में तो यामिनी प्रौढ़ा है, एक किशोरवयीन बेटे की माँ है और उसके सामने उसकी पूरी जिन्दगी पड़ी है इसलिए उसका पुनर्विवाह कराया है।'[16]

'मेरे संधिपत्र' में नायिका शिवा में युगों से परिचित नारी का रूप दिखाई देता है। लेखिका लिखती है कि शिवा का सौन्दर्य मेरी आस्था और विश्वास का सौन्दर्य है। नारी सौन्दर्य की जो गरिमा मुझे अभिभूत करती रही है, वही साकार रूप शिवा है।'[17]

सूर्यबाला के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें विद्रोह कम सामंजस्य अधिक दृष्टिगोचर होता है। हर पात्र यथार्थ का सामना पूरे साहस के साथ करता हुआ दिखाई देता है। उनके उपन्यासों का अवलोकन करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि उनके उपन्यासों का परिवेश गाँव से लेकर महानगर तक विस्तृत है।

निष्कर्ष

सूर्यबाला के उपन्यासों में वर्णित समाज का रचना संसार एक दायरे में ही सिमटा न होकर व्यापकता का घोतक है। उसका एक महत्त्वपूर्ण वैशिष्ट्य यह है कि जीवन के हर पहलू को उसने अपने में समाहित कर रखा है। इनके उपन्यासों की व्यक्ति मानस के ब्रह्म जगत् के साथ– साथ अन्तर्जगत की छवि का प्रभावी चित्रण इनकी अपनी उपलब्धि है। समसामयिक परिवेश के बीच व्याप्त विद्रूपताओं को उजागर करते हुए अमानवीय अँधेरे को चुनौती देने वाला सूर्यबाला का औपन्यासिक साहित्य वस्तुतः मानवीय करुणा एवं उदात्तता की ऊंचाईयों की ओर ले जाने वाला साहित्य है, जिसका महत्त्व निर्विवाद है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ वसन्त कुमार माली , सूर्यबाला के कथा दृ साहित्य में युगबोध, पृण् 114*
2. *डॉप्रियंका कपूर, राजनीतिक समाजशास्त्र, पृण् 55*
3. *डॉ सरला शर्मा, सूर्यबाला की उपन्यास विधा का समग्र मूल्यांकन, पृ 49*
4. *डॉ दामोदर खड़से, सूर्यबाला का सृजन संसार, पृण् 90*
5. *डॉ दामोदर खड़से, सूर्यबाला का सृजन संसार, पृण् 91*
6. *डॉ रतनमाला धारबा धुले, सूर्यबाला के कथा दृ साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृण् 93*
7. *देखि, यामिनी कथा, पृण् 75*
8. *8 देखि, अग्निपंखी, पृण् 26*
9. *डॉण् रतन माला धाखा धुले, सूर्यबाला के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृण् 93*
10. *सूर्यबाला कृत दीक्षांत, पृण् 91*
11. *सूर्यबाला कृत सुबह के इंतजार तक, पृण् 86*
12. *सूर्यबाला कृत अग्निपंखी, पृण् 21*
13. *सूर्यबाला कृत ष्मेरे संधिपत्रष् पृण् 76*
14. *सूर्यबाला कृत ष्मेरे संधिपत्रष् पृण् 3*
15. *सूर्यबाला कृत यामिनी कथा, पृण् 66*
16. *देखि, यामिनी कथा, पृण् 66*
17. *डॉ दामोदर खड़से, सूर्यबाला का सृजन संसार ,पृण् 91*